आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-128 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जनवरी 2025 | मूल्य - 5 रूपए

गर्मी की झप्पी 2.0

चेतना संस्था ने सड़क पर सर्दी से आहत बच्चों और परिवारों को दी ठण्ड से राहत

बालकनामा रिपोर्टरः काजल, दीपक, राजकिशोर, किशन

गरीबी में जन्म लेना आम बात हो सकती है, लेकिन पूरी जिंदगी गरीब बने रहना शायद सबसे बड़ी परेशानी हो सकती है। गरीबी की वजह से जीवन में कई कठिनाइयाँ आती हैं, जो आगे बढ़ने से रोकती हैं और सपनों को पूरा करने में बाधा बनती हैं। जब हम अपने आसपास आर्थिक तंगी से जूझ रहे बच्चों और उनके परिवारों को देखते हैं, तो हमारा मन उनकी सहायता करने के लिए प्रेरित होता है। ऐसे में, जो लोग इनकी मजबूरियों को समझकर उनकी मदद करते हैं, वे न केवल दूसरों के जीवन को संवारते हैं, बल्कि समाज में एक सकारात्मक बदलाव भी लाते हैं। चेतना संस्था विभिन्न राज्यों में एजुकेशन क्लब या वैकल्पिक शिक्षा केंद्र चला रही है और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की सहायता कर रही है। इसी क्रम में इस सर्दी के मौसम को ध्यान में रखते हुए, इन बच्चों को स्वेटर, जैकेट, रजाई और तिरपाल वितरित किए गए, ताकि उन्हें ठंड से राहत मिल सके। इस वर्ष, "गर्मी की झप्पी 2.0" अभियान के तहत 500 स्वेटर दिल्ली की झुग्गियों में संचालित शिक्षा केंद्रों के बच्चों को वितरित किये गए एवं 500 स्वेटर सरकारी स्कूलों में जरूरतमंद बच्चों के बीच वितरित किए गए। अब हम आपको उन बच्चों के विचारों से रूबरू कराते हैं, जिन्हें विभिन्न राज्यों में यह राहत सामग्री मिली। दिल्ली में सड़क एवं कामकाजी बच्चों के एजुकेशन क्लब या कॉन्टैक्ट पॉइंट्स पर स्वेटर और जैकेट वितरित किए गए। इसी उपलक्ष्य में 11 वर्षीय तरुण (परिवर्तित नाम), जो पश्चिम दिल्ली के शिवाजी पार्क के पास रहता है, ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया,

"हमारे सरकारी स्कूल में कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों को स्वेटर दिए गए। जब हमें स्वेटर मिला, तो बहुत खुशी हुई। पहले हमारे पास सिर्फ एक स्वेटर था, जिसे हमें रोज पहनना पड़ता था। वह गंदा भी हो जाता था, लेकिन अब हमारे पास दूसरा स्वेटर भी है, जिससे हम उसे बदल-बदलकर पहन सकते हैं।" बस्ती में रहने वाली 15 वर्षीय बालिका ने बताया, "हमारे यहाँ कई परिवार ऐसे हैं, जो सिर्फ घर चलाने भर का ही कमा पाते हैं, लेकिन उनके पास इतना पैसा नहीं होता कि वे अपने बच्चों के लिए गर्म कपड़े खरीद सकें। पहले, जिन बच्चों के पास गर्म कपड़े नहीं थे, वे ठंड से बचने के लिए कूड़ा बीनते और उसे जलाकर आग तापते थे। लेकिन अब, जब से बच्चों को जैकेट मिली हैं, वे उन्हें पहनकर न केवल स्कूल जाते हैं बल्कि अब शाम के समय खेलते भी हैं, जो पहले ठंड के कारण संभव नहीं था।"

साथ ही, जयपुर में "स्वेटर वाली झप्पी" अभियान के अंतर्गत 500 स्वेटर सड़क और कामकाजी बच्चों को वितरित किए गए, ताकि वे ठंड के मौसम में अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से जारी रख सकें। जयपुर में जब बालकनामा के पत्रकारों ने लाभार्थी बच्चों से बातचीत कर उनकी प्रतिक्रियाएँ जानी तो ज्ञात हुआ हर साल बदलते मौसम की मार झेलने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह राहत किसी वरदान से कम नहीं थी, इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, सर्दियों में बच्चों को ठंड से बचाने के लिए चेतना संस्था द्वारा "स्वेटर वाली झप्पी" विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में स्थानीय पार्षद, पुलिसकर्मी और शिक्षक भी शामिल हुए, जिन्होंने बच्चों को स्वेटर वितरित किए। इस पहल का मुख्य उद्देश्य न केवल बच्चों को ठंड से राहत देना था, बल्कि उन्हें शिक्षा से जोड़कर समाज की मुख्यधारा में शामिल करना और हितधारकों को संवेदनशील एवं जागरूक बनाना भी था। कार्यक्रम के दौरान सड़कों पर रहने वाले और कामकाजी बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए। जैसे कि 11 वर्षीय गोलू, जो जयपुर की जेडीए कच्ची बस्ती में रहता है, उसने खुशी जाहिर करते हुए कहा "मेरे पास स्कूल

शेष पृष्ठ 2 पर

अधिकारों की ओर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बढ़ते कदम

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक
बातूनी रिपोर्टर : दामिनी

जयपुर की कच्ची बस्ती जयसिंह पुरा खोर में सड़क एवं कामकाजी बच्चों में अपनी पहचान और अधिकारों को लेकर जागरूकता तेजी से बढ़ रही है। बच्चों ने अपने जन्म प्रमाण पत्र बनवाने की प्रक्रिया में भागीदारी लेकर न केवल अपने दस्तावेज बनवाने का बीड़ा उठाया, बल्कि अपनी बस्ती के अन्य लोगों की भी मदद की।

चेतना वैकल्पिक शिक्षा केंद्र खोर 1 में पढ़ने वाली बालिका दामिनी (12 वर्ष) और बालक जयदेव (12 वर्ष) ने अपने सामूहिक प्रयास से स्थानीय अधिकारियों और शिक्षकों की मदद से फॉर्म भरने की प्रक्रिया सीखी और स्वयं अपने जन्म प्रमाण पत्र के फॉर्म भरे। इसके बाद इन बच्चों ने समुदाय के अन्य बच्चों और लोगों की मदद करना शुरू कर दिया और बस्ती में दस्तावेज बनवाने के फॉर्म भरने के लिए सहयोग करने लगे।

बालिका दामिनी बताती है कि जब भी दस्तावेज बनवाने की बात आती है, तो सबसे पहले फॉर्म भरने की प्रक्रिया शुरू होती है। जब इस प्रक्रिया की जानकारी नहीं होती है, तो हम आगे पहल नहीं कर पाते। इस चुनौती का सामना कई बार किया, लेकिन अब मुझे बहुत खुशी है कि मैं जान चुकी हूं कि जन्म प्रमाण पत्र बनवाने का फॉर्म कैसे भरा जाता है, इसे कहां जमा करवाया जाएगा, और इसकी पूरी प्रक्रिया क्या होती है। अब मैं अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी यह जानकारी देती हूं, ताकि हमारी बस्ती के अधिक से अधिक बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र बन सकें। दस्तावेज शिक्षा, सरकारी योजनाओं और रोजगार से जुड़ी सुविधाओं के लिए भी अनिवार्य हैं।

बालक जयदेव ने बताया कि यदि हम जैसे बच्चे दस्तावेज बनवाने की प्रक्रिया और जिम्मेदारी स्वयं संभालने लगे, तो दस्तावेज से संबंधित विभिन्न चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। इस पहल ने बस्ती में उत्साह का माहौल बना है। कई लोगों ने इसे बच्चों की समझदारी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी माना है। इस कार्य से न केवल बच्चों को अपनी क्षमताओं पर भरोसा हो रहा है, बल्कि उनके परिवारों में भी संतोष और गर्व की भावना देखी जा रही है। बच्चों की यह पहल समाज के अन्य बच्चों के लिए प्रेरणादायक है। यदि बच्चों को सही दिशा और मार्गदर्शन मिले, तो वे न केवल अपने लिए, बल्कि पूरे समुदाय के लिए भी सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

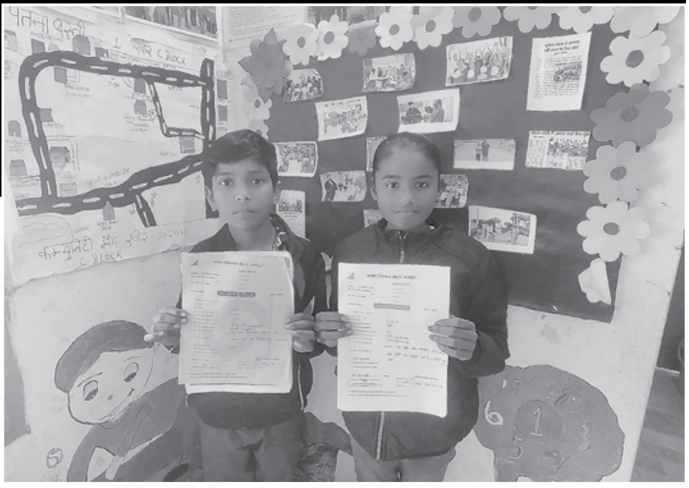

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बस्तियों में फैलता बाल मजदूरी का कहर

बातूनी रिपोर्टर राहुल व रिपोर्टर शम्भू

हाल ही में पत्रकारों ने नॉएडा की एक भीड़-भाड़ वाली जगह पर दौरा किया। इस दौरान, सड़क और कामकाजी बच्चों की स्थिति का पता चला। कुछ साल पहले इस क्षेत्र में बच्चों की संख्या बाल मजदूरी में काफी अधिक थी, लेकिन धीरे-धीरे यह संख्या कम होने लगी थी। हालांकि, वर्तमान में यह देखा गया कि एक बार फिर से बच्चे बाल मजदूरी की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, जैसे छोटे-मोटे ढाबों पर बर्तन धोने और होटल के छोटे-मोटे कार्य करने में। जब पत्रकार इन बच्चों से मिले और बातचीत की कोशिश की, तो बच्चों ने सही से बात नहीं की क्योंकि उनका मानना था कि यदि वे बात करेंगे तो उनके मालिक उन पर अत्याचार करेंगे। लेकिन बच्चों को समझाने के बाद, उन्होंने कुछ देर बातचीत की और बताया कि यह काम वे अपनी मर्जी से नहीं कर रहे हैं। उनका कहना था कि यह उनके गांव का आदमी है, जिसने उन्हें काम करने के लिए यहां भेजा है और उनके माता-पिता ने खुशी-खुशी उन्हें यहां भेज दिया है। उनका कहना था कि आगामी मार्च और अप्रैल में शादियों का सीजन शुरू होने वाला है, इसलिए वे पैसे एकत्रित करने के लिए काम कर रहे हैं ताकि उनकी बड़ी बहनों की शादी हो सके। इसके कारण उनके माता-पिता ने उन्हें यहां काम करने के लिए भेजा है। बच्चों ने बताया कि उन्हें काम करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ठंड में बर्तन धोने के लिए ठंडे पानी का इस्तेमाल करना पड़ता है और दुकान 24 घंटे खुली रहती है, जिससे उन्हें रात भर जागना पड़ता है। घर की जिम्मेदारियों के कारण बच्चों का जीवन कठिन हो रहा है। वे चाहते हैं कि उनके साथ इस प्रकार का व्यवहार न हो। वे भी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन घर की जिम्मेदारियों के कारण उन्हें यह मौका नहीं मिल रहा है। उनका कहना है कि इस स्थिति के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए ताकि उनके जीवन में उचित बदलाव आ सके।

किराये की साइकिल पर सवारी करते मासूम सपने

बालकनामा रिपोर्टर : दीपक बातूनी रिपोर्टर : गोलू

हर किसी के पास अपने सपने होते हैं, लेकिन सभी के पास उन्हें पूरा करने के साधन नहीं होते। जयपुर की जेडीए बापू बस्ती के बच्चों ने अपनी सीमित परिस्थितियों के बावजूद अपने सपनों को पूरा करने का एक अनोखा तरीका खोज निकाला है। इस बस्ती में रहने वाले कई बच्चे साइकिल खरीदने में सक्षम नहीं हैं। उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे उन्हें नई या पुरानी साइकिल दिला सकें। लेकिन इन बच्चों ने हार मानने के बजाय, 10 रुपये प्रति घंटे के किराए पर साइकिल लेकर अपनी इच्छाओं को पूरा करने का रास्ता ढूंढा। बस्ती के एक दुकानदार ने इन बच्चों की जरूरत को समझते हुए उन्हें साइकिल किराए पर देना शुरू किया। बच्चे 10 रुपये देकर घंटों साइकिल चलाते हैं और खुशी-खुशी साइकिल वापस कर देते हैं। लगभग 20-25 बच्चे इस तरह अपनी साइकिल चलाने की इच्छा को पूरा कर रहे हैं। बालक गोलू (11 वर्ष) ने बताया कि उसके पास एक पुरानी साइकिल थी, जो अब खराब हो चुकी है। इसलिए वह पैसे जोड़कर कभी 10 रुपये तो कभी 20 रुपये में साइकिल किराए पर लेता है। बालिका काजल (13 वर्ष) ने बताया कि जब उसकी मां पैसे देती हैं, तो वह उन्हें बचाकर साइकिल चलाने के लिए उपयोग करती है। उसके लिए यह अनुभव बेहद खास और खुशी देने वाला है। दुकानदार का कहना है कि बस्ती के अधिकतर परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं, इसलिए बच्चों के लिए साइकिल खरीदना संभव नहीं होता। उनके पास से रोजाना 8-9 साइकिल किराए पर ली जाती हैं। बालक विशाल (परिवर्तित नाम) ने साझा किया कि वह कबाड़ बीनकर या तांबा जलाकर पैसे जुटाता है और साइकिल किराए पर लेता है। कभी-कभी बाजार में काम करके भी वह पैसे कमा लेता है।,इन बच्चों के लिए साइकिल केवल एक साधन नहीं, बल्कि कुछ पल की खुशी का जरिया है।

कड़कती ठंड से सड़क और कामकाजी बच्चों की बढ़ी मुश्किलें

बातूनी रिपोर्टर सुल्तान व रिपोर्टर शम्भू

बालकनामा के पत्रकार ने इस कड़कती ठंड में सड़क और कामकाजी बच्चों से मुलाकात की और उनसे यह जाना कि वे इस समय किस प्रकार से अपनी ज़िंदगी गुजार रहे हैं। पता चला कि इस कड़कती ठंड के कारण बच्चों और उनके परिवारों की स्थिति बहुत ही खराब हो गई है, क्योंकि ठंड की वजह से न तो वे ठीक से रह पा रहे हैं और न ही ऐसा कोई ठिकाना मिल पा रहा है जहां वे अपने परिवार के साथ ठंड से बचाव कर सकें। पत्रकार ने जब बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताया कि हम पानी भरने के लिए काफी दूर जाते हैं, लेकिन इस समय पानी इतना ठंडा हो गया है कि हम उसका उपयोग स्नान के लिए भी नहीं कर पाते। खराब मौसम के कारण हमें सूखी लकड़ियां भी नहीं मिल रही है, जिससे हम पानी गर्म नहीं कर पा रहे हैं। साथ ही, जिस स्थान पर हम रहते हैं, वहां बिजली की कोई सुविधा भी नहीं है, जिससे हमें मदद नहीं मिल रही है। इतना ही नहीं, पत्रकार कुछ ऐसे बच्चों से भी मिले जो गंदे कपड़े पहने हुए थे। जब पत्रकार ने उनसे पूछा कि वे इतने गंदे कपड़े क्यों पहने हुए हैं, तो बच्चों ने बताया कि खराब मौसम के कारण कई दिनों तक हमारे कपड़े नहीं सुख पाते, और हम जहां रहते हैं वहां और भी लोग होते हैं, ऐसे में हमारे पास पहले से ही कपड़े बहुत कम होते हैं और हमारी माता-पिता जल्दी से कपड़े धोकर सुखा भी नहीं पाते। इस कारण हम कई दिन तक वही गंदे कपड़े पहनते हैं। बच्चों ने अपनी परेशानी को साझा करते हुए यह भी कहा कि वे चाहते हैं कि कड़कती ठंड से बचने के लिए कोई व्यवस्था की जाए, ताकि वे ठंड से सुरक्षित रह सकें और साफ-सुथरे दिख सकें।

चेतना संस्था ने सड़क पर सर्दी से आहत बच्चों और परिवारों को दी ठण्ड से राहत

पृष्ठ 1 का शेष

जाने के लिए स्वेटर नहीं था, लेकिन अब मुझे मिल गया है। मैं अब आराम से स्कूल जा सकता हूं और वहां सबकी तरह दिखूंगा।" खोर बस्ती में रहने वाली कनक ने बताया, "पुलिस अंकल ने हमें स्वेटर दिए और साथ ही अपराध और गलत कार्यों से दूर रहने तथा एक अच्छा नागरिक बनने की सीख भी दी।" यह कार्यक्रम बच्चों के लिए बेहद खास रहा। स्वेटर पाकर उनके चेहरे खुशी से खिल उठे और उन्हें ठंड से राहत मिली। चेतना संस्था की इस पहल से न केवल बच्चों को सर्दी से बचने में मदद मिली, बल्कि वे स्कूल जाने के लिए भी प्रेरित हुए।

चलिए अब नोएडा की ओर चलते हैं और देखते हैं कि वहाँ क्या-क्या वितरित किया गया तथा बच्चों ने अपनी क्या राय रखी? नोएडा में ठंड से बचाव के लिए रजाई, तिरपाल और जैकेट वितरित किए गए। ग्रेटर नोएडा की एक बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय रूपा (परिवर्तित नाम) बालिका ने बताया, "जब हमारी बस्ती में चेतना संस्था के कार्यकर्ता यह सूचना देने आए कि हमें जैकेट, रजाई आदि मिलेंगे, तो हमारे चेहरे पर खुशी आ गई। हमें एक पर्ची भी दी गई, जिसके आधार पर हमें ये आवश्यक सामग्री प्राप्त हुई।"

बालिका ने आगे बताया, "हम इतने अमीर नहीं हैं कि अच्छे और गर्म कपड़े खरीद सकें। हमारे माता-पिता जो भी कमाते हैं, वह घर खर्च में ही लग जाता है। इस बस्ती में कई ऐसे बच्चे हैं जिनके पास पहनने के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े नहीं हैं और वे एक ही कमीज या सूट में ठंड गुजारते हैं। लेकिन हमें खुशी है कि अब चेतना संस्था के सहयोग से हमें जैकेट मिल गई है, जिससे हम ठंड से बच पाएंगे।" चार मूर्ति के पास रहने वाले 15 वर्षीय बालक जीतन (परिवर्तित नाम) ने साझा किया "हर साल सर्दी आते ही हमें इस पर सोचने को मजबूर होना पड़ता है। गर्मियों में कपड़ों की उतनी परेशानी नहीं होती, लेकिन सर्दियों में गरम कपड़े बहुत जरूरी हो जाते हैं। हमारे बस्ती में कई माता-पिता इमारतों में काम करने जाते हैं और कभी-कभी वहाँ से अपने मालिकों के बच्चों के पुराने गर्म कपड़े ले आते हैं, जिससे उनके बच्चे ठंड से बच जाते हैं। लेकिन जिनके माता-पिता ऐसी जगह काम नहीं करते, उन्हें सर्दी बहुत परेशान करती है। कभी-कभी कोई दान देने आ जाता है तो कुछ बच्चों को राहत मिल जाती है, लेकिन जब कोई नहीं आता, तो हमें ठंड से बचने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इस बार चेतना संस्था ने हमें जैकेट दी, जिससे हमें बहुत खुशी मिली है।"

17 वर्षीय बालिका स्नेहा (परिवर्तित नाम) ने बताया "हमारे पास ओढ़ने के लिए सिर्फ दो कंबल हैं–एक पिताजी लेते हैं, एक माताजी, और हम उसी में ठंड काटते हैं। लेकिन दो कंबलों से पूरी तरह ठंड से बचाव नहीं हो पाता। अब जब हमें यह रजाई मिली है, तो हम इसका पूरा उपयोग करेंगे और बिना ठंड से परेशान हुए चैन की नींद ले पाएंगे।"

गुरुग्राम में जैकेट और जुराब वितरण के दौरान बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए। 12 वर्ष के प्रकाश कुमार (परिवर्तित नाम), जिसके पिताजी मजदूरी करते हैं और माँ कोठियों में सफाई का काम करती हैं, ने बताया कि उनके माता-पिता की आय इतनी नहीं कि वे अपने बच्चों को गर्म कपड़े दिला सकें। किराए और खाने-पीने का खर्च ही मुश्किल से पूरा हो पाता है। लेकिन जब चेतना संस्था के सहयोग से प्रकाश को जैकेट और जुराब मिले, तो वह बेहद खुश हुआ। सिर्फ प्रकाश ही नहीं, बल्कि उनके माता-पिता भी अपने बेटे को गर्म कपड़ों में देखकर खुश हुए। उन्होंने कहा, "हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि हम खुद बच्चों के लिए गर्म कपड़े खरीद पाते, लेकिन अब हमारे बच्चे ठंड से सुरक्षित रहेंगे।" रवीना, 11 वर्षीय बालिका, ने साझा किया "मेरे पिताजी किराए पर ऑटो चलाते हैं। जब मुझसे पूछा गया कि क्या मेरे पास कोई गर्म कपड़ा है, तो मैंने जवाब दिया–नहीं, मेरे पास एक ही पुराना, फटा हुआ स्वेटर है, जिसकी चैन भी टूटी हुई है। मैं चाहती थी कि पिताजी मेरे लिए नया गर्म कपड़ा लाएँ, लेकिन मैं उनसे कह नहीं पाई, क्योंकि हमारे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है।" एक दिन जब रवीना केंद्र पर पहुँची, तो उसे पता चला कि चेतना संस्था के माध्यम से बच्चों को गर्म कपड़े और जुराब मिलने वाले हैं। यह सुनकर वह बहुत खुश हुई। अगले दिन संस्था के कार्यकर्ताओं ने सभी बच्चों को जैकेट और जुराब दिए। रवीना भी उन बच्चों में से थी, जिन्हें यह मदद मिली। जैसे ही उसे जैकेट और जुराब मिले, वह खुशी से दौड़ते हुए घर गई और अपने पिताजी को दिखाया, "देखिए पिताजी, मुझे चेतना संस्था से जैकेट और जुराब मिले हैं!"

लखनऊ में भी "गर्मी की झप्पी 2.0" अभियान के तहत बड़े पैमाने पर ऊनी वस्त्र वितरित किए गए, जिससे सड़क और कामकाजी बच्चों को सर्दी से राहत मिल सके। इस पहल में सैकड़ों बच्चों को स्वेटर, जैकेट और गर्म कपड़े दिए गए, ताकि वे ठंड में सुरक्षित रह सकें और अपनी शिक्षा बिना किसी बाधा के जारी रख सकें। इस अभियान के दौरान स्थानीय संगठनों, प्रशासन और समुदाय के सदस्यों ने भी सहयोग किया, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि जरूरतमंद बच्चों तक गर्म कपड़े सही समय पर पहुँचें। बच्चों की आँखों में खुशी और राहत की चमक देखकर यह साफ हो गया कि यह अभियान न केवल उनके शारीरिक आराम के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि उन्हें समाज से जुड़े रहने और अपने भविष्य की ओर आत्मविश्वास के साथ बढ़ने में भी मदद कर रहा था।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

मासिक धर्म स्वास्थ्य एवं स्वच्छता (चलो पीरियड्स पर बात करें) कार्यक्रम का हुआ आयोजन

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः सपना

बालकनामा पत्रकारों ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया, जहां उन्हें जानकारी मिली कि कुछ दिनों पहले चेतना संस्था द्वारा "चलो पीरियड्स पर बात करें" कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। यह कार्यक्रम चेतना संस्था के द्वारा आयोजित "माहवारी संवाद" अभियान का हिस्सा था। इस कार्यक्रम में किशोरियों, उनकी माताओं और बहनों को मासिक धर्म से जुड़ी स्वच्छता और मिथकों के बारे में जागरूक किया गया। पत्रकारों ने कार्यक्रम में शामिल किशोरियों से बातचीत की और उनके अनुभवों को जानने का प्रयास किया। किशोरी सपना (परिवर्तित नाम) ने मुस्कुराते हुए कहा, ह्लमासिक धर्म कोई छुपाने वाली बात नहीं, यह तो हमारी ताकत है !ह्व 13 वर्षीय बालिका कविता (परिवर्तित नाम) ने बताया, ह्लपहले मुझे मासिक धर्म के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन आज मैंने सीखा कि सेनेटरी पैड्स का सही इस्तेमाल और उसे ठीक से निपटाना कितना जरूरी है।ह्व बस्ती की किशोरी राधा (परिवर्तित नाम) ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, ह्लहमारे घर में इस पर बात करना मना था, लेकिन आज मैंने मां से खुलकर इस पर बात की। अब मुझे डर नहीं लगता।ह्व चेतना की टीम ने मासिक धर्म से जुड़े मिथकों को तोड़ने के लिए खेल,

कहानी, और संवादात्मक गतिविधियां आयोजित कीं, जिसमें यह बताया गया कि मासिक धर्म शर्म की नहीं, समझ की बात है। लाभार्थियों ने पोस्टर बनाए और स्लोगन लिखे, जैसे ह्लहमें पीरियड्स पर बात करनी हैह्व और ह्लमासिक धर्म, हमारी शक्ति।ह्व चेतना संस्था ने यह कार्यक्रम जयपुर की 10 अलग-अलग कच्ची बस्तियों में आयोजित किया और लगभग 400 किशोरियों और महिलाओं को सेनेटरी पैड्स वितरित किए। एक 14 वर्ष की किशोरी निशा (परिवर्तित नाम) ने सुझाव दिया, ह्लअगर हर स्कूल में हमें यह शिक्षा दी जाए, तो और भी लड़कियां जागरूक होंगी।ह्व इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में चेतना की टीम, किशोरियों और उनके परिवारों ने अपनी अहम भूमिका निभाई और कार्यक्रम के दौरान किशोरियों ने अपनी रचनात्मकता से चर्चा को दिलचस्प बना दिया।

शिक्षा की तलाश में संघर्ष करता मासूम

बातूनी रिपोर्टर वीर व रिपोर्टर शम्भू

8 वर्षीय बालक मीर (परिवर्तित नाम) उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। गांव में कामकाज नहीं मिलने के कारण वीर अपने परिवार के साथ दिल्ली जैसे राजधानी शहर में आ गया। वर्तमान में वह अपने परिवार के साथ एक पुल के नीचे रहते हैं और वहीं अपना गुजारा करते हैं। मीर ने अपने बारे में बताते हुए कहा, "मेरे परिवार में कुल 6 सदस्य हैं। मेरा बड़ा भाई शादी करके मेरे परिवार से अलग रहता है। मेरे दो छोटे भाई-बहन हैं, जिनकी देखरेख मुझे ही करनी पड़ती है, क्योंकि माताजी और पिताजी अपने कामकाज के लिए पूरे दिन बाहर रहते हैं। मैं भी वर्तमान में भीख मांगने का कार्य करता हूं। यह कार्य मुझे अच्छा नहीं लगता, लेकिन मजबूरी में हमें यह काम करना पड़ता है। "मुझे स्कूल जाने का बहुत

शौक है, लेकिन मैं स्कूल नहीं जा पा रहा हूं क्योंकि मुझे अपने छोटे भाई-बहन की जिम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं। वर्तमान में चेतना संस्था द्वारा एक सामाजिक कार्यकर्ता आते हैं, मैं उनके पास पढ़ाई करता हूं, लेकिन मैं चाहता हूं कि मैं एक अच्छे स्कूल में जाऊं ताकि मेरा भविष्य बन सके। जितना मैंने सीखा है, मैंने अपने भाई-बहन को भी सिखाया है। मुझे शिक्षा बेहद पसंद है, लेकिन घर की मजबूरी के कारण मैं स्कूल नहीं जा पा रहा हूं। कई बार मैंने अपने माता-पिता से भी बात की, लेकिन उनका कहना है कि हमारा कोई ठिकाना नहीं है, हम चार महीने यहां रहते हैं और दो महीने किसी और स्थान पर। इसलिए स्कूल में दाखिला मिलना बहुत मुश्किल है। वे मुझे कहते हैं कि तुम कोई कामकाज सीखो, जो तुम्हारे भविष्य में काम आ सके। लेकिन मेरा मानना है कि काम सीखने के लिए भी पढ़ाई की आवश्यकता होती है। अगर मैं पढ़ाई ही नहीं करूंगा, तो काम का हिसाब कैसे देख पाऊंगा? इसीलिए मैं चाहता हूं कि कम से कम 12वीं पास कर लूं, ताकि मेरे माथे पर अनपढ़ का दाग न लगे। मैं यह भी चाहता हूं कि मेरे छोटे-छोटे भाई-बहन पढ़ाई-लिखाई करके अपनी जिंदगी उज्जवल करें और मेरे जैसे ही उन्हें भीख ना मांगनी पड़े। हम चाहते हैं कि कोई हमारी मदद करें ताकि हम अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें।

सपनों को पूरा करने के लिए बाल श्रम करने को मजबूर बालक

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः जुगनू

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान रिपोर्टर ने आगरा रोड स्थित 52 फुट बालाजी के पास एक साइकिल की दुकान पर एक बालक को काम करते हुए देखा। रिपोर्टर ने बालक से उसका नाम और परिवार के बारे में जानने की कोशिश की, तो बालक ने बताया कि उसका नाम चीनू है और वह पालड़ी बस्ती में रहता है। वह कई वर्षों से अपने परिवार के साथ किराए के मकान में रहता है। जब रिपोर्टर ने बालक से स्कूल के बारे में पूछा, तो 13 वर्षीय चीनू (परिवर्तित नाम) ने बहुत उदासीनता से बताया कि जयपुर में उनके कई रिश्तेदार रहते हैं जो बहुत अच्छे पैसे वाले हैं और उनके खुद के मकान हैं, लेकिन वे और उनके माता-पिता मजदूरी करते हैं। सही समय पर और ज्यादा पैसे न मिलने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति सही नहीं है। चीनू ने कहा, "हमारे रिश्तेदार कई बार ताने मारते हैं और लड़ाई-झगड़ा भी करते हैं, क्योंकि हम किराए के मकान में रहते हैं और हमारे पास खुद का घर नहीं है।" चीनू ने आगे बताया कि वह इसीलिए काम करता है ताकि वह पैसा इकट्ठा कर सके और अपने माता-पिता की मदद कर सके, जिससे वे अपना खुद का घर खरीद सकें। साइकिल की दुकान पर काम करने के लिए उसे प्रतिदिन 70 रुपए मिलते हैं और वह सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक काम करता है। वह कहता है, "मुझे भी स्कूल जाने और पढ़ने का बहुत मन करता है, लेकिन यह संभव नहीं है। अगर मैं स्कूल जाने लगा तो पैसा नहीं कमा पाऊंगा और मेरा सपना अधूरा रह जाएगा। अगर मुझे अपना सपना पूरा करना है, तो मुझे अपने माता-पिता की मदद करने के लिए काम करना ही पड़ेगा, और तभी हम अपना घर खरीद पाएंगे।"

समाज का यह दायित्व है कि वह चीनू जैसे बच्चों को उनके सपनों को पूरा करने के लिए सही अवसर और शिक्षा प्रदान करे, न कि ताने देकर उन्हें बाल श्रम की बेड़ियों में बांधे।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों का हुआ जीना दुश्वार, भीख के लिए हो रहा अत्याचार

बातूनी रिपोर्टर आराधना,
बालकनामा रिपोर्टर शंभू

बालकनामा के पत्रकारों ने दिल्ली के एक क्षेत्र का दौरा किया, जिसमें उन्होंने बच्चों की परेशानियों को समझने की कोशिश की। बच्चों ने अपनी तकलीफें बताते हुए कहा, "अब तो हमारा जीना दुश्वार हो गया है, क्योंकि माता-पिता का कामकाज भी नहीं चल रहा। इस वजह से वे हमसे ही उम्मीद करते हैं कि हम कुछ पैसे कमाकर लाएं, लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है।" बच्चों ने बताया कि वे जिस मेट्रो स्टेशन के पास भीख मांगते थे, वहां अब पुलिस की सख्ती बढ़ गई है। जब वे राहगीरों से मदद मांगने जाते हैं, तो पुलिस अधिकारी उन्हें रोक देते हैं। इस कारण उनकी कमाई बहुत कम हो गई है, जिससे उनके माता-पिता भी उनसे नाराज रहते हैं।

बच्चों ने कई अन्य स्थानों पर भी कोशिश की, लेकिन वहां भी कोई अच्छा अनुभव नहीं रहा। वे कहते हैं, "हम चाहते हैं कि हमें इस काम में बाधा न दी जाए, क्योंकि इसी से हमारा परिवार किसी तरह गुजर-बसर कर पा रहा है। ठंड के कारण हमारे माता-पिता का काम पूरी तरह बंद हो गया है।" उनके माता-पिता उन्हें मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे में जाकर भीख मांगने के लिए कहते हैं, लेकिन अब लोग ज्यादातर खाने-पीने की चीजें देते हैं, पैसे नहीं। इस पर माता-पिता नाराज होकर बच्चों को सिर्फ पैसे मांगने के लिए कहते हैं, ताकि परिवार के अन्य सदस्य भी खाना खा सकें। बच्चों का कहना है, "अगर हम पैसे न लाएं तो माता-पिता हम पर गुस्सा करते हैं और जबरन हमें इस कड़ाके की ठंड में दिन-रात भीख मांगने के लिए भेजते हैं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो हमारी तबीयत खराब हो सकती है और हम ठंड का शिकार हो सकते हैं।" अंत में, बच्चों ने अपील की, "हम चाहते हैं कि कोई हमारे माता-पिता को समझाएं, ताकि वे हम पर इस तरह का अत्याचार न करें।"

सिग्नल पर पेन बेच रहे कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सुमित,
बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर

बालकनामा के रिपोर्टर राज किशोर जब गुरुग्राम की झुग्गी बस्तियों में विजिट करने के लिए जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे, जिनकी उम्र लगभग 12 या 13 साल के आसपास होगी, रात के करीब 7:30 बजे रेड लाइट सिग्नल के पास दो कंबल लेकर बैठे हुए थे। सिग्नल पर जब रेड लाइट होती, तो वही बच्चे गाड़ियों के पास आकर गाड़ियों का कांच खटखटाकर लोगों से कहते थे, "दीदी-भैया, पेन ले लो", लेकिन फिर भी कोई उनका पेन नहीं लेता था। जब बालकनामा के रिपोर्टर राज किशोर उन बच्चों से मिलने के लिए वहां पहुंचे, तो बच्चे उन्हें देखकर बोले, "भैया, पेन ले लो।" जब हमने उनसे बात की, तो उनसे पूछा कि आप यह काम क्यों करते हो, तो बच्चे शमार्ते हुए दूर भागने लगे। तभी उनकी मम्मी वहां आईं और हमने उनसे पूछा कि आप बच्चों से यह काम क्यों करवाते हो? अभी तो इनकी पढ़ाई की उम्र है, और आप इन बच्चों को इतनी ठंड में सिग्नल लाइट पर पेन बेचने के लिए कह रहे हो। उनकी मम्मी ने कहा, "यह हमारी मजबूरी है। बच्चे और हम खुद पेन बेचने का काम करते हैं। हम गाड़ियों का शीशा भी साफ कर देते हैं। जब गाड़ी रुकती है, तो हम शीशा साफ करके पेन भी बेचते हैं। कभी-कभी कोई 5 रुपये दे देता है, लेकिन कभी-कभी कुछ नहीं मिलता।" जब हमने उनसे पूछा कि आप लोग कहां रहते हो, तो उन्होंने कहा, "हमारा कोई घर नहीं है, इसलिए हम फुटपाथ पर सो जाते हैं। दिनभर रेड लाइट सिग्नल पर पेन बेचते हैं और रात में फुटपाथ पर सो जाते हैं।"

छत से गिरने के कारण बालक हुआ घायल

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः राज

बालकनामा पत्रकार ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनकी समस्याओं और अनुभवों को जानने का प्रयास किया। जयसिंहपुरा बस्ती के 11 वर्षीय बालक जीत (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ दिनों पहले वह छत पर अपने दोस्त के साथ पतंग उड़ा रहा था। दोस्तों के साथ शर्त लगी हुई थी कि कौन कितनी पतंग काटता है और कितनी पतंग पकड़ता है। इस आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण वह पतंग उड़ाने के साथ-साथ पतंग पकड़ने की भी कोशिश कर रहा था। वह छत से लटक कर पतंग पकड़ने की कोशिश कर रहा था, तभी अचानक उसका संतुलन बिगड़ गया और वह छत से गिर गया। बस्ती के कुछ लोग बाहर बैठे हुए थे, जिन्होंने जीत को छत से गिरते हुए देख लिया और हादसे पर तत्परता दिखाते हुए उसे शीघ्र ही इलाज के लिए अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने सिर पर गहरी चोट आने के कारण 10 टांके लगाए। जीत के माता-पिता ने सही समय पर बालक को अस्पताल पहुंचाने के लिए बस्ती वालों का आभार व्यक्त किया। जीत ने बताया कि इस हादसे के बाद उसके माता-पिता ने उसे और उसके दोस्तों को छत पर जाने से मना किया और मैदान में ही पतंग उड़ाने और खेलने को कहा, साथ ही गलत शर्तों या नियमों को लागू करने से भी मना किया। इस घटना के बारे में पूरी जानकारी मिलने के बाद बातूनी रिपोर्टर राज ने बस्ती के सभी बच्चों को पतंग उड़ाने के दौरान ध्यान रखने योग्य बातों के बारे में जानकारी दी और साथ ही पतंग उड़ाने या खेलने के दौरान सतर्क रहने तथा स्वयं की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए समझाया।

लॉटरी के सहारे सपने संजोते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर अनुजा

कच्ची बस्तियों में रहने वाले बच्चे अपनी जरूरतें पूरी करने और परिवार का सहारा बनने के लिए लॉटरी भरने को मजबूर हैं। यह स्थिति समाज की जमीनी हकीकत के बारे में बताती है। ऐसी ही एक खबर जयपुर की कच्ची बस्ती कली का भट्टा से सामने आई। बालकनामा रिपोर्टर ने इस मुद्दे की विस्तृत जानकारी के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत की। बालिका अनुजा ने बताया कि बस्ती में लगभग 20 बच्चे लॉटरी में हिस्सा लेते हैं। वे प्रतिदिन 10 रुपये जमा करते हैं, जिससे महीने भर में 300 रुपये इकट्ठे हो जाते हैं। लॉटरी के तहत पर्ची निकाली जाती है, और जिसका नाम निकलता है, उसे बारी-बारी से जमा राशि मिल जाती है। यदि किसी बच्चे को पैसे ब्याज पर देने होते हैं, तो वह इसे ब्याज पर भी चला सकता है। बच्चे अपनी छोटी-छोटी बचत को लॉटरी में लगाते हैं, इस उम्मीद में कि वे अपनी और अपने परिवार की जरूरतें पूरी कर सकें। लॉटरी में पैसे मिलने पर वे अक्सर अपनी पढ़ाई से जुड़ी चीजें, जैसे कि कॉपी, किताबें, पेंसिल और

स्कूल बैग खरीदते हैं। इसके अलावा, नए कपड़े, जूते या अन्य जरूरी सामान भी लेते हैं। कुछ बच्चे अपनी बचत का एक हिस्सा घरवालों को भी देते हैं ताकि परिवार को थोड़ी आर्थिक राहत मिल सके। यह स्थिति दर्शाती है कि सीमित संसाधनों के बावजूद ये बच्चे अपने परिवार और खुद की स्थिति सुधारने के लिए मेहनती और जुझारू हैं। हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि लॉटरी जैसे खेल बच्चों के लिए जोखिम भरे हो सकते हैं, क्योंकि इसमें धन गंवाने की संभावना अधिक होती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नाली की खुदाई से हो रहे हादसे

बच्चों और स्थानीय निवासियों को हो रही समस्याएँ

रिपोर्टरः राजकिशोर

वजीराबाद, हरियाणा के सेक्टर-52 में जब रिपोर्टर राजकिशोर विजिट कर रहे थे, तो पता चला की एक निर्माणाधीन इमारत के पास नाली की खुदाई से स्थानीय निवासियों की समस्याएँ बढ़ गई हैं। निर्माण कार्य के दौरान नाली की खुदाई के कारण वहां एक बड़ा गड्ढा बन गया है, जो लोगों के लिए खतरा बन चुका है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह गड्ढा कई दिनों से खुला पड़ा है और इसके आसपास कोई सुरक्षा इंतजाम नहीं किए गए हैं। इसी गड्ढे में खेलते हुए एक बच्चा गिर गया। हालांकि, गनीमत रही कि बच्चा सुरक्षित बच गया और उसे कोई गंभीर चोट नहीं आई, केवल कुछ जख्मी हुआ। दूसरी ओर, महिलाओं ने भी अपनी समस्याओं को व्यक्त किया। एक महिला ने बताया, "यह गड्ढा सबकी जान जोखिम में डाल रहा है। बच्चों के लिए यह सबसे बड़ा खतरा बन चुका है, इसका जिम्मेदार कौन है? यहां खेलते हुए कोई भी बच्चा कभी भी गिर सकता है। प्रशासन और निर्माण करने वाली एजेंसी ने बिल्कुल भी जिम्मेदारी नहीं दिखाई है।" घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। उनका कहना है कि संबंधित प्राधिकरण और निर्माण कार्य कराने वालों ने लोगों की सुरक्षा को नजरअंदाज किया है। इलाके के एक निवासी ने कहा, "यह गड्ढा न सिर्फ कई हादसों को न्योता दे रहा

है, बल्कि आसपास से गुजरने वालों के लिए भी बड़ी परेशानी पैदा कर रहा है।" इस गड्ढे के कारण न केवल दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ा है, बल्कि इसका असर इलाके के यातायात पर भी पड़ा है। गड्ढे के कारण पास से गुजरने वाले वाहन चालकों को संभलकर गुजरना पड़ता है। साथ ही, गड्ढे में पानी जमा होने से डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा भी मंडरा रहा है।

स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द इस गड्ढे को भरकर सुरक्षा उपाय किए जाएं, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचा जा सके। यह घटना प्रशासन और निर्माण कार्य करने वालों की लापरवाही का जीता-जागता उदाहरण है। अब देखना यह होगा कि इस समस्या का समाधान कब तक होता है।

बस्तियों में फैलता टीबी बन रहा बच्चों के स्वास्थ्य के लिए खतरा

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः जयदेव

जयपुर की चेतना बस्ती से खबर मिली कि बच्चे टीबी (ट्यूबरक्लोसिस) बीमारी से संक्रमित हो रहे हैं। खबर की पूरी जानकारी लेने के लिए बालकनामा पत्रकार ने बस्ती का दौरा किया, तो बालक जयदेव से जानकारी मिली कि स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और जागरूकता के अभाव के कारण टीबी की बीमारी तेजी से फैल रही है। इससे न केवल वयस्क, बल्कि छोटे बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं। यह स्थिति बेहद गंभीर है और तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। बस्ती में स्वच्छता और स्वास्थ्य सुविधाओं की भारी कमी है। इन इलाकों में रहने वाले लोगों को न तो पौष्टिक आहार मिल पाता है और न ही पर्याप्त चिकित्सा सेवाएं। यह स्थिति बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर बना रही है, जिससे वे आसानी से टीबी जैसी बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि टीबी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में हवा के जरिए फैलता है। टीबी के बैक्टीरिया हवा में तब फैलते हैं जब फेफड़ों या गले की सक्रिय टीबी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति खांसता, छींकता, बोलता है, तो आसपास के लोग इन बैक्टीरिया को सांस के जरिए अंदर ले सकते हैं और इससे लोग संक्रमित हो सकते हैं। इसी

कारण बस्ती में लगभग 10 वयस्कों को यह बीमारी थी, लेकिन वर्तमान में बस्ती के 5 बच्चे इस बीमारी से ग्रसित हो गए हैं। हालांकि, नजदीकी प्राथमिक उपचार केन्द्र से इनका इलाज चल रहा है, लेकिन बीमारी के दौरान रखी जाने वाली सावधानियों के अभाव के कारण यह बीमारी फैलती जा रही है क्योंकि संक्रमित बच्चे बस्ती के अन्य बच्चों के साथ खेलते हैं। सरकार की ओर से 'राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम' चलाया जाता है, लेकिन कच्ची बस्तियों तक इसकी पहुंच शायद इतनी नहीं है। दवाओं और जागरूकता की कमी इस बीमारी को रोकने में बड़ी बाधा बन रही हैं।

सड़क और कामकाजी बच्चों के नेतृत्व से बस्ती में आया बदलाव

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः सिया

जयसिंहपुरा खोर बस्ती में स्थित चेतना वैकल्पिक शिक्षा केंद्र के बच्चों ने सुरक्षा के मुद्दे पर आवाज उठाते हुए स्थानीय पार्षद को एक शिकायती पत्र सौंपा। इस पत्र में शिक्षा केंद्र के पीछे कचरे के ढेर को हटाने, बस्ती की सफाई और नगर निगम की गाड़ियों के समय पर न आने की समस्या का उल्लेख किया गया था।

बच्चों ने पत्र में बताया कि गंदगी के कारण बस्ती के निवासियों को स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। हालांकि, स्थानीय पार्षद ने बच्चों की शिकायत को पहले नजरअंदाज किया, लेकिन केंद्र के लीडर्स ने हार नहीं मानी और अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक रहते हुए समय-समय पर पार्षद से संपर्क कर शिकायती पत्र की कार्यवाही के बारे में जानकारी ली।इसके बाद, पार्षद ने बच्चों की शिकायत पर तुरंत संज्ञान लिया और नगर निगम के कर्मचारियों को सफाई कार्य को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। बच्चों के प्रयासों और पहल से बस्ती से कचरे को उठवाया गया और सफाई अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस कार्रवाई से बस्ती के लोग और बच्चे संतुष्ट और खुश हैं। चेतना केंद्र के बच्चों ने पार्षद का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी आवाज सुनी गई और समस्या का समाधान हुआ। स्थानीय निवासी भी इस पहल की सराहना कर रहे हैं और स्वच्छता बनाए रखने का संकल्प ले रहे हैं। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि यदि जनप्रतिनिधि सक्रिय रहें, तो स्थानीय समस्याओं का समाधान समय पर किया जा सकता है।

इतना भी आसान नहीं है भीख मांगना

बातूनी रिपोर्टर सुल्तान व रिपोर्टर शम्भू

बालकनामा के पत्रकार ने सड़क और कामकाजी बच्चों के साथ एक बैठक की। इस बैठक में बच्चों ने अपनी समस्याओं पर खुलकर चर्चा की और बताया कि उनके जीवन में हर दिन नई समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं, लेकिन फिर भी वे जैसे-तैसे अपने जीवन को आगे बढ़ा रहे हैं। जब पत्रकार ने गंभीरता से बात की, तो बच्चों ने बताया कि हाल ही में कई मोमोज और बर्गर की दुकानों के मेट्रो स्टेशन के पास खुलने से वहां काफी लोग खाने-पीने के लिए आते हैं। जब वे बच्चे इन दुकानों के आस-पास भिक्षाटन करने जाते हैं, तो दुकानदार उन्हें डंडे से मार कर भगा देते हैं। अगर वे नहीं भागते, तो उन्हें गाली-गलौज से बात की जाती है और कई बार तो धक्का-मुक्की भी की जाती है।

उनका मानना है कि बच्चों के गंदे कपड़े दुकानदारों के ग्राहकों पर गलत असर डालते हैं, इसलिए वे इस तरह से बच्चों के साथ व्यवहार करते हैं। लेकिन बच्चों का कहना है कि वे ग्राहकों से सिर्फ कुछ पैसे मांगते हैं, और ऐसा व्यवहार करना गलत है। उनका मानना है कि उनके साथ इस तरह का बुरा व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे भी इस समाज का हिस्सा हैं और उन्हें भी प्यार और सुरक्षित जीवन जीने का अधिकार है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नए ठिकाने में नई उम्मीदें बांधता बचपन

बातूनी रिपोर्टर दिलखुश, रिपोर्टर किशन

चलिए जानते हैं, सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपनी छोटी-छोटी खुशियों को कैसे बड़ा बना लेते हैं। जब बालकनामा पत्रकार नोएडा की कुछ बस्तियों में रहने वाले बाल साथियों से मिले तो 15 वर्षीय बालक रमेश (परिवर्तित नाम) ने अपनी खुशियों के बारे में बताते हुए कहा, "हम नोएडा में कई वर्षों से रह रहे हैं। हमारे घर में पाँच सदस्य हैं–माता-पिता, दो भाई और एक बहन। माता-पिता बेलदारी का काम करते हैं, जबकि बड़ा भाई दिल्ली में एक कंपनी में काम करता है और वहीं रहता है। पहले हम नोएडा में चार मूर्ति के नजदीक अपने माता-पिता के साथ रहते थे। वे वहीं रहकर बिल्डिंगों में बेलदारी का काम करते थे।" उसने आगे बताया, "वहाँ पर हमारा रोजमर्रा का जीवन बहुत मुश्किल हो गया था, क्योंकि बढ़ती महँगाई में एक-एक रुपया बचाना बहुत कठिन हो रहा था। पिताजी ने गाँव में घर बनाने के लिए लोगों से कर्ज.लिया था, लेकिन अब तक वह चुका नहीं पाए हैं। जिंदगी में कब खुशियाँ आएँगी और कब दुख, यह कोई नहीं जानता।" फिर उसने एक घटना साझा की, "एक दिन हमारी बस्ती में एक व्यक्ति काम करवाने के लिए मजदूरों की तलाश कर रहा था। हमारे माता-पिता उससे मिले, तो उसने बताया कि चार मूर्ति के नजदीक एक मार्केट क्षेत्र में कई कंपनियों का निर्माण कार्य चल रहा है। उसने हमें वहाँ रहने के लिए मुफ्त झुग्गी देने का वादा किया, साथ ही पानी, बिजली और वॉशरूम की सुविधा भी। यह सुनकर पिताजी बहुत खुश हुए और उन्होंने सोचा कि अगर हम वहाँ चले जाएँगे, तो हर महीने कमरे का किराया देने से बचेंगे और जल्दी से जल्दी कर्ज.चुका पाएँगे।" अब, हम चार मूर्ति के नजदीक मार्केट इलाके में रह रहे हैं, किराया बचाकर झुग्गी में रह रहे हैं, और हम काफी खुश हैं।

पारंपरिक सोच को चुनौती देते हुए किशोरी ने माहवारी स्वच्छता को लेकर बढ़ाई समुदाय में जागरूकता

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर पूजा

जब बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की गणेशपुरी बस्ती का दौरा किया, तो एक सकारात्मक बदलाव देखने को मिला। गणेशपुरी बस्ती की 13 वर्षीय पूजा (परिवर्तित नाम), जो एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखती हैं, आज अपने समुदाय के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। पूजा ने चेतना संस्था के "माहवारी संवाद" कार्यक्रम में भाग लेकर न केवल खुद की सोच बदली, बल्कि अपने समुदाय में भी जागरूकता फैलाई। इस कार्यक्रम में शामिल होने से पहले, पूजा और उनकी सहेलियों को माहवारी स्वच्छता की सही जानकारी नहीं थी। सांस्कृतिक कुरीतियों और शर्म के कारण वे सैनिटरी नैपकिन का उपयोग नहीं करती थीं। लेकिन "माहवारी संवाद" सत्र में भाग लेने के बाद, पूजा ने माहवारी की जैविक प्रक्रिया, स्वच्छता बनाए रखने के महत्व और सैनिटरी नैपकिन के सही उपयोग के बारे में सीखा। अब पूजा न केवल स्वयं नियमित रूप से सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करती हैं, बल्कि अपनी सहेलियों और पड़ोस की महिलाओं को भी इसके लिए प्रोत्साहित करती हैं। पूजा की इस पहल से बस्ती में माहवारी से जुड़े मिथकों में कमी आई है। अब किशोरियाँ और महिलाएँ खुले तौर पर नजदीकी आंगनवाड़ी केंद्र से सैनिटरी नैपकिन की मांग कर रही हैं। पूजा का आत्मविश्वास और उनकी यह प्रेरक कहानी साबित करती है कि एक छोटा कदम भी बड़े बदलाव की शुरूआत कर सकता है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की भागीदारी से सजा गणतंत्र दिवस समारोह

बालकनामा रिपोर्टर दीपक,
बातूनी रिपोर्टर विवान

जयपुर के विभिन्न सरकारी विद्यालयों में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। बच्चों ने नृत्य और गायन की रोचक प्रस्तुतियां दीं, जिससे समारोह में उपस्थित अतिथियों का मन मोह लिया। बच्चों ने बताया कि उन्होंने इस प्रस्तुति के लिए कई दिनों तक अभ्यास किया था, और मंच पर आकर परफॉर्म करना उनके लिए एक सपने के सच होने जैसा था। बालक विवान ने उत्साहित होकर कहा, "पहली बार हमें इतना बड़ा मंच मिला, जहां हम अपनी कला दिखा सके। चेतना संस्था द्वारा बाल नेतृत्व कार्यशाला में जो सिखाया गया था, उसे हमने आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया। जब हमने मंच पर परफॉर्म किया, तो सभी ने तालियां बजाईं। यह हमारे लिए गर्व की बात है।"

कार्यक्रम में बच्चों की कला और उत्साह को देखकर अतिथियों ने उनकी खूब प्रशंसा की। उनकी मेहनत और समर्पण को सराहते हुए बच्चों को उपहार वितरित किए गए। इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक संगठनों और अधिकारियों ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और उनके उत्थान के लिए निरंतर सहयोग देने का संकल्प लिया। बच्चों की प्रस्तुतियों ने यह साबित कर दिया कि सही मार्गदर्शन और सहयोग से वे भी अपने जीवन में ऊंचाइयों तक पहुंच सकते हैं।

खो-खो वर्ल्ड कप देखकर खुश हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सुमन

खो-खो वर्ल्ड कप 2025 की मेजबानी इस बार भारत ने की है। यह बहुचर्चित प्रतियोगिता 13 से 19 जनवरी 2025 तक नई दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित की गई। इस बार खो-खो वर्ल्ड कप का रोमांच देखने के लिए दिल्ली और गुरुग्राम से बढ़ते कदम के 80 बच्चों ने इस आयोजन में भाग लिया। जब बढ़ते कदम के सभी बच्चों को स्टेडियम ले जाया गया, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वे पहली बार इतने बड़े खेल आयोजन को देख रहे थे और बेहद उत्साहित थे।

जैसे ही इंग्लैंड और मलेशिया की टीमें स्टेडियम में पहुंचीं, बच्चे खुशी से झूम उठे और खो-खो मैच देखने में मग्न हो गए। जब बच्चों से इस अनुभव के बारे में पूछा गया, तो बढ़ते कदम की लीडर सुमन ने कहा, "मुझे खो-खो का मैच देखकर बहुत अच्छा लगा और पहली बार स्टेडियम देखने का मौका मिला। स्टेडियम का माहौल शानदार था, और इतने सारे लोगों के बीच मैच देखना गर्व की बात थी।"

सुमन ने आगे बताया, "जो दोनों टीमें खेल रही थीं, वे कितने अनुशासन में थीं! मुझे पहले नहीं पता था कि खो-खो टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं, लेकिन आज पता चला कि एक टीम में 14 खिलाड़ी होते हैं और हर टीम को सात मिनट के अंदर खेलना होता है। यह सब देखकर बहुत खुशी हुई। जब कोई टीम जीतती थी और ढोल-नगाड़े बजते थे, तो हम सब बच्चे खुशी से नाचने लगते थे।"

सुमन ने अपने अनुभव को साझा करते हुए यह भी कहा, "मैं भी खो-खो खेलना चाहती हूँ। इंग्लैंड और मलेशिया की टीमों का खेल बहुत शानदार था और उनका खेलने का तरीका मुझे बेहद पसंद आया। स्टेडियम के बाहर हमने सांस्कृतिक नृत्य भी देखा और उसमें भी शामिल होकर खूब मस्ती की।" सुमन ने अंत में कहा, "खेलने से शरीर और मस्तिष्क का विकास होता है, इसलिए हमें रोज खेलना चाहिए। आज हमें स्टेडियम घूमने का यह शानदार मौका चेतना संस्था की वजह से मिला, और हम बहुत खुश हैं।"

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

ओपन बेसिक एजुकेशन, सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए शिक्षा की नई राह

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर साक्षी

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और ओपन बेसिक एजुकेशन (डइए) से जुड़े बच्चों के अनुभव जानने का प्रयास किया। बच्चों ने बताया कि दस्तावेजों की कमी के कारण उन्हें विद्यालय में प्रवेश नहीं मिला, लेकिन चेतना संस्था के सहयोग से उम्र के अनुसार डइए में दाखिला मिल गया। पहली बार उन्होंने जाना कि ओपन बेसिक एजुकेशन क्या होती है, कक्षाओं में पढ़ाई की प्रक्रिया कैसी होती है, और परीक्षा का स्वरूप क्या होता है। 14 वर्षीय पूजा (परिवर्तित नाम) ने बताया: "मैं पहले छाजले बनाने का काम करती थी, लेकिन अब ओपन बेसिक एजुकेशन के तहत कक्षा 8 में पढ़ रही हूं। परीक्षा की तैयारी मुश्किल थी, लेकिन चेतना कार्यकर्ता ने मेरी मदद की और नियमित रूप से सेंटर पर टेस्ट पेपर की प्रैक्टिस करवाई। अब मुझे विश्वास है कि मैं परीक्षा पास कर लूंगी।" 9 वर्षीय अंशु ने कहा "पहले मुझे लगा था कि मैं पढ़ नहीं पाऊंगा, लेकिन अब मुझे डेस्कवर्क, टेस्ट पेपर और शिक्षकों का मार्गदर्शन मिल रहा है। मैं कक्षा 3 की परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं, और अब गणित और हिंदी विषय मुझे अच्छे लगने लगे हैं।" 12 वर्षीय अर्चना ने बताया "मैंने पहले कभी स्कूल नहीं देखा था, लेकिन अब पढ़ाई मजेदार लगती है। पहली बार किताबों से पढ़ाई कर रही हूं और परीक्षा की तैयारी में मेहनत कर रही हूं।" पहली बार ओपन बेसिक एजुकेशन पाठ्यक्रम से पढ़ाई कर रहे इन बच्चों के लिए

यह सफर चुनौतियों से भरा रहा, लेकिन उनके अनुभव प्रेरणादायक हैं। वर्तमान में, ये बच्चे कक्षा 3, 5 और 8 की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। चेतना कार्यकर्ताओं ने बताया "जो बच्चे उम्र अधिक होने या दस्तावेजों की कमी के कारण नियमित विद्यालयों में प्रवेश नहीं पा सके, उन्हें ओपन बेसिक एजुकेशन (डइए) से जोड़ा गया है ताकि वे औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर अपने भविष्य को संवार सकें। इन बच्चों को मुफ्त पाठ्यक्रम सामग्री उपलब्ध कराई गई है और उनके लिए विशेष कक्षाएं संचालित की जा रही हैं। यह पहल शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ने का एक बड़ा अवसर है। इन बच्चों में पढ़ाई के प्रति उत्साह है और वे मुश्किलों के बावजूद कड़ी मेहनत कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य है कि वे आत्मनिर्भर बनें और अपने भविष्य को संवार सकें। ओपन बेसिक एजुकेशन के माध्यम से इन्हें शिक्षा का अधिकार मिल रहा है, जिससे वे आगे चलकर बेहतर अवसर प्राप्त कर सकेंगे। यदि ऐसे प्रयास जारी रहे, तो समाज में शिक्षा का स्तर और ऊंचा उठाया जा सकता है।"

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने भरी शिक्षा की नई उड़ान, विद्यालयों के वार्षिकोत्सवों में हुआ सम्मान

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर मनीष

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और चेतना वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों से विद्यालय में नामांकित सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनके अनुभव जानने का प्रयास किया।

इस दौरान यह जानकारी मिली कि हाल ही में विभिन्न सरकारी विद्यालयों में वार्षिक उत्सव का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें सड़क एवं कामकाजी बच्चों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। ये बच्चे अपनी मेहनत और लगन से बोर्ड परीक्षाओं में अ ग्रेड प्राप्त करने में सफल रहे, जिसके लिए उन्हें प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो प्रदान किए गए।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बल्लभपुरा में पढ़ने वाले बालक मनीष ने बताया, "जब मुझे स्कूल के वार्षिक उत्सव में सम्मानित किया गया, तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया। मंच पर जब मेरा नाम पुकारा गया और प्रधानाचार्य जी ने मुझे सम्मानित किया, तो मैं बहुत गर्व महसूस कर रहा था। यह मेरे शिक्षकों के सहयोग और मेरी मेहनत का परिणाम था। यह पल मुझे आगे भी मेहनत करने और नए लक्ष्य हासिल करने की प्रेरणा देता रहेगा।"

बालक पवन ने बताया, "जब वार्षिक उत्सव में मुझे अच्छे आचरण (गुड मेनर्स) के लिए सम्मानित किया गया, तो यह मेरे लिए गर्व और खुशी का पल था। स्कूल प्रशासन ने मुझे किताबों और पेंसिल का एक विशेष सेट भेंट किया। यह देखकर मेरे माता-पिता बहुत खुश हुए और मुझे गर्व

महसूस हुआ। मुझे एहसास हुआ कि अच्छे संस्कार और शिष्टाचार न केवल हमें एक अच्छा इंसान बनाते हैं, बल्कि हमारे माता-पिता और शिक्षकों को भी गौरवान्वित करते हैं। यह सम्मान मुझे आगे भी अच्छे व्यवहार और अनुशासन बनाए रखने की प्रेरणा देता रहेगा।"

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों और अभिभावकों ने बच्चों की उपलब्धियों की सराहना की।

इसके अलावा, विद्यालय प्रशासन ने बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने कहा कि इन बच्चों की सफलता समाज के लिए प्रेरणास्रोत है और शिक्षा के माध्यम से ही उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव संभव है।

पिता के बिना संघर्ष में डूबी बच्चों की जिंदगी

बातूनी रिपोर्टर माहिरा,
बालकनामा रिपोर्टर किशन

हर परिवार में घर की जिम्मेदारियाँ संभालने वाला एक व्यक्ति होता है, चाहे वह माता जी हों, बड़ा भाई हो या पिताजी। यदि कमाने वाला या जिम्मेदारी उठाने वाला न हो, तो घर की परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल जाती हैं, और परिवार को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 12 साल की बालिका जूली (परिवर्तित नाम) ने बताया, "जब हम गाँव में रहते थे, तो पिताजी मेहनत करके हर महीने समय पर घर का खर्च चलाने के लिए पैसे भेजते थे। हम सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते थे और कमाई की कोई चिंता नहीं थी। पिताजी की मौजूदगी में हम निश्चिंत होकर अपनी शिक्षा पर ध्यान दे पाते थे। लेकिन एक दिन

माताजी और पिताजी के बीच लंबी बातचीत हुई, जिसके बाद माताजी नाराज हो गईं और अचानक हमें दिल्ली ले आईं। जब हम दिल्ली आए, तो कुछ समय बाद पिताजी भी हमारे पास आ गए और दो महीने हमारे साथ रहे। लेकिन अचानक एक दिन माता-पिता के बीच फिर से झगड़ा हुआ, और इस बार पिताजी हमें छोड़कर कहीं दूर चले गए। अब स्थिति इतनी खराब हो गई है कि न तो घर में खाने का सामान है और न ही घर चलाने के लिए पैसे। माताजी काम की तलाश में थीं, और अब उन्हें एक घर में नौकरी मिल गई है, लेकिन वहाँ से उन्हें केवल 2000 महीने मिलते हैं। दुख की बात यह है कि सिर्फ कमरे का किराया ही 3000 है। ऐसे में घर चलाने के लिए मेरा छोटा भाई, जिसकी उम्र मात्र 10 वर्ष है, भी दो-तीन घंटे परचून की दुकान में काम करने लगा है। अब माताजी ने फैसला किया है कि वे भी बिल्डिंग में काम करने जाएँगी, ताकि घर का खर्च चल सके। मैं भी काम ढूंढ रही हूँ, लेकिन अब पढ़ाई का कोई ठिकाना नहीं रहा। गाँव छोड़कर आने के बाद अब काम की मजबूरी के कारण पढ़ाई पूरी तरह छूट गई है। हमारी बस यही प्रार्थना है कि पापा, जिस भी कारण हमें छोड़कर चले गए, उसे भुलाकर हमारे भविष्य के बारे में सोचें और वापस आ जाएँ। यदि वे हमारे पास लौट आएँ, तो हमारा जीवन पूरी तरह बदल सकता है।"

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

छोटे भाई की देखभाल के दौरान गड्ढे में गिरी बालिका, टूटा हाथ

बातूनी रिपोर्टर तन्नू, बालकनामा रिपोर्टर किशन

कौन कहता है कि गलती सिर्फ छोटे बच्चों से होती है? गलती कभी भी, किसी से भी, और किसी भी वक्त हो सकती है। नोएडा की बस्ती में जब पत्रकार बच्चों से बातचीत कर रहे थे, तो उनकी नजर एक दुखी दिखने वाली बालिका पर पड़ी। पत्रकार उसके पास पहुंचे और उसकी शारीरिक स्थिति देखी, तो पाया कि उसके हाथ में प्लास्टर चढ़ा हुआ था। उसे दुखी देखकर पत्रकारों ने उससे बातचीत की और उसके हाथ में प्लास्टर चढ़ने का कारण पूछा।

बालिका ने बताया कि बस्ती में अधिकतर झुग्गियां होने के कारण खेलने के लिए मैदान नहीं है। इसलिए बच्चे सड़क किनारे लगे पेड़ों पर रस्सी, दुपट्टा आदि बांधकर झूले बना लेते हैं और उन्हीं पर खेलते हैं।

इसके साथ ही, हमें अपने छोटे भाई-बहनों का भी ध्यान रखना पड़ता है। जिस जगह पर झूला बनाया गया था, उसके पास ही एक नाला था, जो खाली पड़ा था और उसमें कूड़ा-कबाड़ा, ईंट-पत्थर आदि भरे हुए थे। एक दिन मैं अपने छोटे भाई को पेड़ के पास बैठाकर झूले पर झूलने लगी।

अचानक मेरा भाई नाले की ओर बढ़ने लगा, तो मैं जल्दी से झूले से उतरकर उसे पकड़ने के लिए दौड़ी। तभी मेरे उतरते ही एक दूसरी बच्ची झूले पर बैठ गई। मैं नाले के किनारे खड़ी थी, और उस बच्ची ने बिना देखे झूला झूलना शुरू कर दिया। झूलते समय उसकी टांग मेरे पीठ पर लगी, जिससे मैं संतुलन खो बैठी और हाथ के बल नाले के गड्ढे में गिर गई। इस हादसे में मेरा हाथ टूट गया।

आसपास मौजूद लोगों ने मुझे उठाया और पास के एक डॉक्टर के पास ले गए। फिर मेरी माता जी को बुलाकर मुझे सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां पता चला कि मेरे हाथ की हड्डी टूट गई है। इस हादसे से मैं बहुत दुखी और परेशान हूँ, और अब ठीक से खेल भी नहीं पाती।

झुग्गियों के बच्चों को दी जाने वाली चीजों का दान: वास्तव में है मदद या नुकसान?

बातूनी रिपोर्टर अंजलि,
बालकनामा रिपोर्टर किशन

नोएडा की कई बस्तियों के आसपास ऊँची-ऊँची इमारतें मौजूद हैं। लेकिन जब इन इमारतों में रहने वाले लोग झुग्गी में रहने वाले बच्चों के लिए खाने, पहनने या पढ़ने की चीजें देकर जाते हैं, तो वे किस तरह की होती हैं? बच्चे उनका किस तरह से इस्तेमाल करते हैं? क्या वे चीजें सही होती हैं या नहीं? ग्रेटर नोएडा की कुछ ऐसी बस्तियों में बालकनामा के पत्रकार पहुँचे, जहाँ कई झुग्गियाँ थीं। उनके पास ही कई ऊँची इमारतें बन रही थीं, और कुछ पहले से ही बनकर खड़ी थीं। वहीं रहने वाली 11 वर्षीय बालिका डोली (परिवर्तित नाम) ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा "हम झुग्गी में रहते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि कोई भी हमें कुछ भी दे जाए और हम उसे खुशी-खुशी ले लें। यह भी जरूरी नहीं कि जो भी दिया जाए, वह सही हो। हमारे माता-पिता सुबह से ही काम पर चले जाते हैं और रोज

आसपास की बिल्डिंगों में रहने वाले लोग हमारे लिए चीजें लाकर छोड़ जाते हैं। इनमें से कुछ लोग अच्छे होते हैं, लेकिन कुछ हमें बच्चा समझकर खराब चीजें दे जाते हैं। मैं 11 साल की हूँ, मुझे अच्छे-बुरे की समझ है, लेकिन 1 से 6-7 साल के छोटे बच्चों को नहीं होती। उन्हें कोई भी कुछ भी दे जाए, वे खुशी-खुशी ले लेते हैं। पर इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।" डोली ने आगे बताया–"एक दिन हमारी झुग्गी के छोटे बच्चे खेल रहे थे और हम घरेलू काम कर रहे थे। तभी कुछ लोग आए और उन्होंने बच्चों को लॉलीपॉप, नमकीन आदि देकर चले गए। बच्चे खुशी-खुशी खाने लगे। जब हम उनके पास पहुँचे और वह चीजें देखीं, तो पता चला कि नमकीन की एक्सपायरी डेट खत्म हो चुकी थी। लॉलीपॉप की पन्नी जली हुई थी और उस पर दाग लगे हुए थे। कुछ बच्चों ने खाना भी शुरू कर दिया था। जब हमें यह दिखा, तो हमने सारी चीजें फेंक दीं। हमें बहुत गुस्सा आया और इस बात से हम आज भी नाराज हैं।" इस खबर के माध्यम से हम सभी से अपील करते हैं कि 'कृपया झुग्गी में रहने वाले बच्चों को खराब चीजें न दें। इससे उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है और वे बीमार पड़ जाते हैं। अगर आप कुछ देना ही चाहते हैं, तो अच्छी और उपयोगी चीजें दें।'

बच्चों में बढ़ता डर, कहीं हो न जाएं बेघर

ब्यूरो रिपोर्ट

कुछ महीने पहले आपने रील या न्यूज के माध्यम से नोएडा सेक्टर 78 में एक व्यक्ति के टावर पर चढ़ने की खबर जरूर देखी होगी। लेकिन इस घटना के बाद झुग्गियों में रहने वाले कई लोगों और बच्चों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसी विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए बालकनामा के पत्रकार सेक्टर 78 की बस्तियों में पहुंचे और वहां रहने वाले बच्चों से बातचीत की। झुग्गी में रहने वाली 14 वर्षीय एक बालिका नेहा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इस बस्ती में कई लोग हैं जो तरह-तरह की हरकतें करते हैं, और उनकी वजह से पूरी झुग्गी के लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

कुछ महीने पहले, जब एक व्यक्ति शराब पीकर टावर पर चढ़ गया था, तब इससे पहले ही पुलिस और कमेटी के लोग यहां आए थे और झुग्गीवासियों को यह कहकर चले गए थे कि बस्ती जल्द ही खाली करनी होगी, क्योंकि यह कुछ ही दिनों में तोड़ी जाने वाली है। इस खबर से घबराकर कई लोगों ने आसपास के इलाकों में किराए पर कमरे ले लिए, लेकिन कुछ लोग वहीं रुके रहे। उनका कहना था कि जब झुग्गी टूटेगी, तब देखा जाएगा। पुलिस के जाने के 5-6 दिन बाद, बस्ती के ही एक व्यक्ति ने शराब पीकर फिर से टावर पर चढ़ने की कोशिश की। शुक्र है कि उसके साथ कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। जैसे ही लोगों ने उसे देखा, उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने उसे नीचे उतारने के लिए कई तरीके अपनाए, लेकिन वह बड़ी मुश्किल से, काफी देर बाद नीचे आया। नीचे आते ही पुलिस ने उसे पकड़कर पीटा और फिर पूरे बस्तीवासियों को फटकार लगाई। इसके साथ ही, एक बार फिर झुग्गी खाली करने की धमकी दी गई। बालिका ने आगे बताया कि जब भी बस्ती में कोई बड़ी घटना होती है, तब झुग्गी का मालिक गायब हो जाता है। किसी को पता नहीं होता कि वह कहां है। वह कभी भी इस इलाके में नजर नहीं आता, लेकिन नए लोगों को बिना कागज के लाख-डेढ़ लाख रुपये में जमीन बेचता रहता है। साथ ही, कुछ लोगों को झुग्गी किराए पर देकर उनसे किराया वसूलता है। लेकिन इस बस्ती का कोई भरोसा नहीं कि कब इसे खाली करना पड़ जाए। यही चिंता यहां रहने वाले सभी लोगों को परेशान करती है, और दिन-रात इसी को लेकर वे चिंतित रहते हैं। हम बच्चों का कहना है कि हमने पैसे देकर यह जमीन खरीदी है और कई वर्षों से यहां रह रहे हैं, तो फिर हमें यह खाली करने के लिए क्यों कहा जा रहा है?

शिक्षा से रोशन होगा मेरा भविष्य

बातूनी रिपोर्टर जासमीन,
बालकनामा रिपोर्टर किशन

जब बालकनामा के पत्रकार अनेक बच्चों के साथ बातचीत कर रहे थे, तब 15 वर्षीय एक बालिका रोजी (परिवर्तित नाम) ने एक अन्य 11 वर्षीय बालिका की कहानी साझा करते हुए कहा, "जब भी मैं इस बच्ची को देखती हूं, तो मुझे बहुत खुशी होती है।" यह सुनकर पत्रकार उस बालिका के पास पहुंचे, जिसकी कहानी के बारे में वह जान रहे थे। वहां पहुंचकर उन्होंने उससे बातचीत की और उसके जीवन की कहानी को समझा।बालिका ने बताया, "मैं वर्तमान में 11 वर्ष की हूं। मेरे परिवार में माता-पिता के अलावा चार बहनें और एक भाई है। मैं चौथे नंबर पर आती हूं। मेरे पिता बेलदारी (मजदूरी) का काम करते हैं और मेरी मां कोठियों में घरेलू काम करने जाती हैं। मेरा एक छोटा भाई भी है, जो घर में सबसे छोटा है, और मैं उसकी देखभाल

भी करती हूं। मैं वर्तमान में पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही हूं और नियमित रूप से स्कूल जाती हूं। मैं शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानती हूं। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं सरकारी विद्यालय में पढ़ती हूं या प्राइवेट स्कूल में, मैं बस इतना जानती हूं कि पढ़ाई मन लगाकर करनी चाहिए। मुझे हिंदी विषय बहुत अच्छा लगता है क्योंकि यह हमारी मातृभाषा है, और मैं इसे बहुत ध्यान से पढ़ती हूं। मैं रोज सुबह 9:00 बजे स्कूल जाती हूं और दोपहर 2:30 बजे तक वहीं रहती हूं। अब आप सोच रहे होंगे कि इतने समय तक मेरे छोटे भाई की देखभाल कौन करता होगा? मेरी मां सुबह 5:00 बजे अपने काम पर जाती हैं और 8:30 बजे घर लौट आती हैं, फिर छोटे भाई का ध्यान रखती हैं। जब मैं और मेरे भाई-बहन स्कूल से लौटते हैं, तब वह दोबारा 3:00 बजे काम पर चली जाती हैं। हम एक किराए की झुग्गी में रहते हैं और इसी तरह अपना जीवनयापन कर रहे हैं। मैं स्कूल की छुट्टी नहीं करती क्योंकि मुझे वहां बहुत अच्छा लगता है। मैं स्कूल की मॉनिटर भी हूं, और घर पर रहना मुझे पसंद नहीं आता। जो मजा स्कूल में आता है, वह घर पर नहीं आता, इसलिए मैं रोज स्कूल जाती हूं। केवल बहुत जरूरी काम होने पर या जब मैं बीमार होती हूं, तभी स्कूल नहीं जाती, वरना हर दिन जाती हूं। मैं पढ़-लिखकर अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहती हूं।"

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार, एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471